Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-2

Topic – Political Thought of Narendra Deva

Class – B.A. Degree – I (Hons. Paper – II)
Unit – II

Subject – Political Science

Date – 08 May 2020

By Rahul Kumar Jha.

आचार्य नरेन्द्र देव के राजनीतिक विचार (Political Thought of Acharya Narendra Deva) :-

वर्ग संघर्ष और नवजीवन आंदोलन के संदर्भ में :-

आचार्य नरेंद्र देव ने महात्मा गांधी के वर्ग सौहार्द के सिद्धांत से मतभेद प्रकट करते हुए मार्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का समर्थन किया। मार्क्सवादी चिंतन का अनुसरण करते हुए उन्होंने यह तर्क दिया कि सारा मानव-इतिहास परस्पर-विरोधी वर्गों के निरंतर संघर्ष की कहानी है। जो वर्ग अपने समय की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाना चाहता है, वह वर्ग-संघर्ष में विजय प्राप्त करके नीतिक परिस्थितियों पर अपना नियंत्रण स्थापित

कर लेता है, शर्त यह है कि वह संख्या की दृष्टि से विरोधी वर्गों की तुलना में सुदृढ़ हो। नई सामाजिक नीति विशाल जन-समुदाय के नैतिक बोध के अनुरूप होती है। अतः वह सामाजिक नैतिकता का मानदंड बन जाती है।

आचार्य नरेन्द्र ने लिखा है कि समकालीन समाज में कामगार-वर्ग और उसके सहायक-किसान और बुद्धिजीवि वर्ग का बहुमत है। अतः उनका नैतिक बोध सामाजिक नैतिकता का उपयुक्त प्रतिनिधित्व करता है। भारत के जनसाधारण किसी एक श्रेणी में नहीं आते। वे केवल औद्योगिक कामगारों की श्रेणी में नहीं आते, जैसा कि मार्क्सवाद की अवधारणा है। इनमें औद्योगिक मजदूरों, बगान मजदूरों, किसानों और खेतिहर मजदूरों के अलावा बुद्धिजीवि वर्ग भी सम्मिलित है। यदि इन्हें अपने पृथक-पृथक हितों के अनुसार पृथक-पृथक संगठन बनाने दें तो इनकी शक्ति बिखर जाएगी और उन्हें विशेष सफलता नहीं मिलेगी।

ये सब वर्ग साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के आतंक से पीड़ित हैं। अतः इन्हें एकजुट करके

समाजवादी आंदोलन को सुदृढ़ करना जरूरी है। इस आंदोलन का वर्ग-चरित्र एक-सा नहीं होगा, परंतु उसका लक्ष्य एक ही होगा - साम्राज्यवाद और पूंजीवाद को धराशायी करके उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व स्थापित करना। समस्त वंचित वर्गों के इस मिले-जुले आंदोलन को ही आचार्य ने "नवजीवन आंदोलन" की संज्ञा दी है।

नवजीवन आंदोलन के अंतर्गत कामगार, किसान और बुद्धिजीवी वर्गों को कंधे-से-कंधा मिलाकर और हाथों-में-हाथ डालकर आगे बढ़ना होगा और साम्राज्यवादी एवं पूंजीवादी शक्तियों से लोहा लेना होगा। समस्त वंचित वर्गों के हितों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए और उन्हें एकजुट करके अपने सामान्य लक्ष्य की पूर्ति की ओर प्रेरित करने के लिए आचार्य ने लोकतंत्र की आवश्यकता पर बल दिया।

(CHAPTER CONTINUES.....)